पराक्रमयुता प्रज्ञा राष्ट्राभ्युदयसाधिका

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान

11, अशोक रोड, नई दिल्ली–110 001

व्रती स्वयंसेवक बनें

आज सबसे बड़ी चुनौती हिन्दुत्व जागरण की है

सरकार्यवाह श्री सुरेश राव (भैय्या जी) जोशी से साक्षात्कार

साक्षात्कारकर्ता– तरुण विजय

☼ भैय्या जी! सेवा प्रमुख से सरकार्यवाह तक की आपकी यात्रा के, इस चरण में आपको कैसा लग रहा है और यह संघ की किस प्रक्रिया का परिणाम है?

□ रा. स्व. संघ में योजनाबद्ध सेवा कार्य 1989 में पूजनीय डा. हेडगेवार जी जन्मशती वर्ष में प्रारंभ किये गए थे। तब मुझे महाराष्ट्र प्रांत में सेवा विभाग का दायित्व दिया गया। उस समय मैं जलगांव जिले के नासिक विभाग में विभाग प्रचारक था। उसके बाद 1990 में मुझे महाराष्ट्र प्रांत के सेवा प्रमुख का दायित्व मिला। मेरा सौभाग्य ही रहा कि महाराष्ट्र में पूर्व से ही बहुत अच्छे कार्यकर्त्ता सामाजिक रचनात्मक कार्यों में लगे हुए थे। इसलिए उनका सान्निध्य और अनुभव लाभ प्राप्त होने से मुझे भी बहुत कुछ सीखने के लिए मिला। इस प्रकार काम करते–करते सेवा कार्यों का भी प्रसार होता गया। हम तो जानते ही थे कि जो भी स्वयंसेवक शाखा के माध्यम से संघ रचना में आता है, वह सहजता से ही हर प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं में हमेशा से ही काम करता रहा है। इसके पीछे एक ही कारण है– समाज के प्रति आत्मीयता। उसी भावना को आगे बढ़ाते हुए हमने सेवा विभाग प्रारंभ किया। इस आत्मीयता के दायरे को विकसित करने की बात सबके सामने रखी और प्राकृतिक आपदा के समय तो हम सहभागी होते ही रहे हैं। लेकिन अपने समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग हमेशा ही कई प्रकार की कठिनाइयों में और अव्यवस्थाओं में जीता है। उसके प्रति भी वही संवेदना लेकर हमें काम करना चाहिए, यह थी हमारी सैद्धांतिक भूमिका सेवा कार्यों को बढ़ाने के पीछे। यही समझाकर हमने कार्यकर्त्ताओं को इस दिशा में मोड़ने का प्रयास किया।

संघ की व्यक्ति निर्माण की कल्पना यह है कि व्यक्ति पुरुषार्थी बनेगा। ध्येयनिष्ठ बनेगा। संवेदनशील बनेगा। प्रश्नों को समझने वाला बनेगा। यही दिशा और इन उद्देश्यों को लेकर सेवा क्षेत्र में संघ के कार्यकर्ताओं ने काम शुरू किया। मुझे अत्यधिक प्रसन्नता है कि इस क्षेत्र में मुझे

काम करने का अवसर मिला। ऐसे बहुत से अनुभवी लोग मिले जिनका मार्गदर्शन मुझे प्राप्त होता रहा। इसी प्रवाह में 2003 में जब सह सरकार्यवाह बना तो उसके बाद भी इन विषयों के प्रति मेरी रुचि होने के कारण प्रवास में संघ के नित्य विषयों के साथ–साथ इस विषय के बारे में भी कई व्यक्तियों से व कार्यकर्ताओं से मिलना होता था और थोड़ा अधिक जानकारी रखने के कारण कई प्रकार के सेवा प्रशिक्षण वर्गों में भी मैं जाता रहा। प्रारंभ से ही जो संघ का समाज के प्रति भावबोध है उसे देखते हुए मैं यह तो नहीं कहूंगा कि हमने सेवा कार्यों के द्वारा कुछ नया दिया है। प्रारंभ से ही संघ में इस बात का आग्रह रहा ही है कि समाज के लिए उपयुक्त व्यक्तियों का शाखा की रचना द्वारा निर्माण हो। इस बात का आग्रह रखने के कारण मुझे कार्य सुलभता रही और सह सरकार्यवाह बनने के बाद भी अन्य विषयों के साथ इस सेवा विषय को भी रखता आया। वैसे भी संघ में कार्य के संदर्भ में रुचि–अरुचि का विषय नहीं रहता। जो भी दायित्व दिया जाता है उसको समझकर, दायित्व निर्वाह किया जाता है। यही हमारी परंपरा है। मेरा झुकाव स्वाभाविक रूप से सेवा कार्यों में ज्यादा रहा तो भी यह नहीं कहूँगा कि यह और किसी की सोच में नहीं था। हमारे पूजनीय निवर्तमान सरसंघचालक सुदर्शन जी तो अनेक वर्षों से ग्राम विकास और कृषि आदि विषयों को रखते आए हैं। और उसके परिणाम बहुत अच्छे निकले हैं। अब सरकार्यवाह होने के कारण भले ही अब तक मेरा अधिक झुकाव सेवा क्षेत्र की ओर ही रहा हो, पर अब तो अन्य विषयों पर भी समग्रता से विचार करने का दायित्व आया है।

☼ अर्थात् अब सेवा कार्यों की ओर आपको समय कम मिलेगा?

□ नहीं, हमने एक रचना बनाई है। संघ की तो परंपरा है कि कार्यकर्ता विकसित होते रहते हैं। प्रांत–प्रांत में और अपने कई क्षेत्रों में ऐसे कार्यकर्ता हैं जो बहुत रुचि और अध्ययनपूर्वक इस कार्य में लगे हैं। अब यह प्रश्न नहीं है कि सेवा कार्य कैसे चलेंगे ? यह कार्य तो अपनी गति से चल पड़ा है। डा. साहब की जन्मशती के समय सेवा कार्यों की संख्या 5 हजार थी। आज हम डेढ़ लाख सेवा कार्यों तक पहुँचे हैं, यह किसी एक व्यक्ति के द्वारा होना संभव ही नहीं था। देशभर में बहुत बड़ी टीम है। इस दिशा में चिंतन करने वाला बहुत बड़ा वर्ग सेवा क्षेत्र में लगा है। और यह बढ़ता ही जा रहा है। किसी एक व्यक्ति के आधार पर न यह बढता है, न ही यह घटता है। न ही यह संघ की शैली में है। हम तो यह मानते हैं कि परंपरा चलती है, लोग उसको स्वीकार करते हुए, विशेषज्ञ होते हुए आगे बढ़ते जाते हैं। मुझे लगता है कि आज यह चिंता का विषय नहीं कि कौन इसकी तरफ देख रहा है। किसी एक व्यक्ति पर कोई निर्भर नहीं है। स्वयंसेवकों ने, कार्यकर्ताओं ने सेवा विषय को बहुत अंतःकरण से स्वीकार किया है और मैं देख रहा हूँ कि बहुत अधिक गति से यह सेवा कार्य चलेगा।

☼ संघ द्वारा प्रेरित डेढ़ लाख सेवा कार्यों में किस प्रकार के सेवा कार्य है? ये कार्य कहां–कहां हैं ?

□ अखिल भारतीय स्तर पर 6–7 संस्थाओं के सेवा कार्य इसमें जुड़े हैं– इनमें विश्व हिन्दू परिषद, वनवासी कल्याण आश्रम, भारत विकास परिषद, राष्ट्र सेविका समिति, दीनदयाल शोध संस्थान व अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद सहित अनेक संस्थाएं व कार्यकर्ता इसमें संलग्न हैं। हमने अखिल भारतीय संस्थाओं के साथ देशभर की लगभग एक हजार से भी अधिक स्वयंसेवी संस्थाओं को लेकर एक ट्रस्ट के रूप में राष्ट्रीय सेवा भारती संगठन का निर्माण किया है। इस के अंतर्गत वे सभी संस्थाएं हैं जो किसी अखिल भारतीय संगठन से सम्बद्ध नहीं हैं, रचना के नाते ये राष्ट्रीय सेवाभारती से संलग्न होकर कार्य करने के लिए बनी हैं। जहां तक सेवा कार्यों के प्रकार का प्रश्न है, चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो या स्वास्थ्य का हो, सामाजिक संस्कारों का क्षेत्र हो या स्वावलंबन का, इन चारों पर ही विशेष ध्यान देकर विभिन्न प्रकल्पों को चलाया जाता है। इसे विडम्बना ही कहा जाएगा कि अपने देश में शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति सामान्यतया उपेक्षापूर्ण रवैया ही रहा है।

☼ क्या विद्याभारती के कार्य भी इसमें जोड़े जाते हैं?

□ नहीं। लेकिन विद्याभारती जो सेवा कार्य करती है, उसे जोड़ते हैं, सामान्यतः विद्याभारती जो विद्यालय चलाती है उसे सेवा कार्य नहीं कह सकते, वे तो समाज की स्वाभाविक अपेक्षा को पूरा करते हैं। विद्याभारती के अध्यापकों द्वारा कई नगरों में, झुग्गी झोपड़ी–बस्तियों, ग्रामीण क्षेत्रों, वनांचल में जो एकल विद्यालय व छात्रावास चलते हैं, वे निःशुल्क हैं जो निश्चित रूप से सेवा कार्यों में शामिल हैं।

☼ संघ प्रेरणा से स्वयंसेवकों द्वारा देशभर में कितने अस्पताल चलते हैं?

□ पूरे देश में स्वयंसेवकों द्वारा स्थापित संस्थाओं के माध्यम से सेवा के भाव से लगभग 31 अस्पताल चल रहे हैं। जिनमें डॉक्टर समर्पित होकर काम कर रहे हैं। कोई अस्पताल किसी ट्रस्ट ने शुरू किया है और डॉक्टर काम कर रहे हैं ऐसा नहीं है। चिकित्सकों ने ही मिलकर सेवाभाव से इन चिकित्सालयों को प्रारंभ किया है। इनमें लातूर का विवेकानन्द अस्पताल, संभाजी नगर (औरंगाबाद) का हेडगेवार अस्पताल, भारत विकास परिषद द्वारा कोटा में संचालित एक बड़ा अस्पताल, विवेकानन्द मेडिकल मिशन द्वारा दिल्ली में संचालित नेत्र चिकित्सालय तथा केरल में वायनाड में वनवासी बंधुओं के बीच चलने वाला विवेकानन्द मेडिकल मिशन द्वारा संचालित अस्पताल है। इस प्रकार समाज की अपेक्षाओं को पूरा करते हुए एक स्वयंसेवी संगठन के नाते एक बहुत बड़ी शक्ति स्वास्थ्य क्षेत्र में जुटी हुई है।

☼ और कितने ब्लड बैंक होंगे?

□ वर्तमान में देशभर में लगभग 18 ब्लड बैंक हैं। इस योजना का प्रारंभ महाराष्ट्र में ही हुआ था। रक्त बैंक इस समय महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, म. प्र और उत्तर प्रदेश में सफलतापूर्वक चल रहे है।

☼ अभी कुछ समय पूर्व मुझे ठाणे जाने का अवसर मिला जहां का रक्त बैंक बहुत प्रभावी कार्य कर रहा है, उसका उद्घाटन भी आप ने ही किया था, संभवतः तब आप सेवा प्रमुख थे, डा. साहब के जन्मशताब्दी वर्ष में यह कार्य प्रारंभ हुआ था?

□ हां, डाक्टर साहब की जन्मशताब्दी पर हमने ब्लड बैंक योजना का प्रारंभ किया था। लेकिन इससे कुछ समय पूर्व ही पुणे में जनकल्याण समिति ब्लड बैंक प्रारंभ कर चुकी थी। धीरे–धीरे संपूर्ण महाराष्ट्र में ब्लड बैंकों का जाल निर्माण हुआ। इस समय महाराष्ट्र में ही लगभग 14–15 ब्लड बैंक चलते हैं। इसके अलावा तमिलनाडु, बंगलौर और हाल ही में उत्तरप्रदेश में बरेली में यह कार्य शुरू किया गया है, एक मध्यप्रदेश के रतलाम में भी है। स्थानीय लोग अपने स्तर पर ट्रस्ट बनाकर इनको चलाते हैं। हम तो केवल ब्लड बैंकों का ताना–बाना एकत्रित करते है। और प्रयास करते है कि सब की समस्याओं को सब मिलकर हल करें।

☼ थैलीसीमिया के रोगियों और मानसिक दृष्टि से विशेष बच्चों (स्पास्टिक) के लिए भी एक केन्द्र बनाया गया है?

□ जिस क्षेत्र में ऐसे थैलीसीमिया के रोगी मिलते हैं जिन्हें निरंतर खून चढ़ाना पड़ता है, ऐसे बच्चों व परिवारों को निःशुल्क रक्त उपलब्ध करवाया जाता है। नासिक, जालना और नागपुर में ब्लड बैंक योजना के अंतर्गत ही एक विशेष टीम थैलीसीमिया से प्रभावित बच्चों के लिए गठित की गई है। इसी प्रकार अकोला में भी केन्द्र है। मानसिक रूप से विशेष बच्चों के लिए लातूर में संवेदना नाम से प्रकल्प शुरू किया गया है। किसी एक प्रकार की मानसिक विकलांगता पर काम करने वाली बहुत संस्थाएं हैं, लेकिन सेरेब्रल फालिसी (बहु विकलांगता) के क्षेत्र में नए विद्यालय बहुत ही कम हैं। संवेदना नामक संस्था इस क्षेत्र में कार्यरत हुई है जिसे केन्द्र सरकार से भी मान्यता मिली है। एक और बात बताना मैं ठीक समझता हूँ कि जिस प्रकार हम मानसिक रूप से विशेष व्यक्तियों के लिए काम करते हैं उसी प्रकार प्रज्ञा चक्षुओं के बीच भी 'सक्षम' नाम से कार्य कर रहे हैं।

☼ सक्षम संगठन मुख्य रूप से क्या काम करता है?

□ इसमें प्रारंभिक समय में हमने दृष्टिहीन बंधुओं के लिए ही कार्य प्रारंभ किया किन्तु, अब साथ–साथ शारीरिक रूप से अक्षम और मानसिक विकलांग व विशेष बच्चों के स्वावलंबन हेतु, उनकी समस्याओं के समाधान हेतु भी प्रयत्न करने का ध्येय रखा है। 'सक्षम' संगठन के नाम में ही उसके काम का उद्देश्य स्पष्ट होता हैं।

☼ और आरोग्य रक्षक योजना क्या है?

□ बड़े अस्पतालों को छोड़ दें तो हम जानते हैं कि छोटे ग्रामीण क्षेत्रों में अत्यंत सामान्य आवश्यकताओं की भी पूर्ति नहीं हो पाती। इसलिए हमने एक आरोग्य रक्षक योजना चलाई है। जो कई प्रांतों में वनवासी कल्याण आश्रम एवं सेवा भारती के द्वारा संचालित है । लगभग छः हजार

गांवों में इस समय उसी गांव का एक युवक औषधि पेटी को साथ रखकर समूचे क्षेत्र की सामान्य बीमारियों के लिए दवाइयां उपलब्ध करवाता है।

☼ देश में ये आरोग्य रक्षक योजना से युक्त छः हजार गांव कहां–कहां हैं? पूर्वोत्तर में किन–किन प्रांतों में आरोग्य रक्षक योजना चल रही है ? इसकी व्यवस्था और दवा वितरण किस प्रकार होता है?

□ ये छः हजार गांव पूर्वांचल, उ.प्र, बिहार, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र में मुख्यतः और कुछ आंध्रप्रदेश में हैं। पूर्वोत्तर में भी 7 राज्यों में से मिजोरम को छोड़कर यह योजना चल रही है। क्योंकि वहां अभी कार्यकर्ता उपलब्ध नहीं हुए हैं। छः प्रांतों में इसका कार्य बहुत प्रभावी ढंग से चल रहा है। उ0 प्र0 में दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा 'दादी मां का बटुआ' नाम से ग्रामीण क्षेत्रों में यह योजना चलाई जा रही है। आरोग्यरक्षकों कों पैदल चलने वाले 'बेयरफुटेड डॉक्टर' कहें या 'पैरामेडिक' डाक्टर, जो भी कहें, हमारे लिए प्रसन्नता की बात है इनमें से कोई भी व्यक्ति मानधन नहीं लेते। वे सेवाभाव से कार्य करते हैं। हां हम उन्हें सभी प्रकार की दवाइयां उपलब्ध करवाते हैं। उनके प्रशिक्षण की भी व्यवस्था करते हैं और उस पर जो व्यय होता है उसका खर्च उठाते हैं । जहां तक दवाइयों के वितरण का प्रश्न है मुख्यतः होम्योपैथी की दवाइयां दी जाती है। कुछ आयुर्वेदिक दवाइयां भी रखते है। और साथ ही जैसे विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा निर्दिष्ट तीन प्रकार की एलोपैथिक दवाइयां जैसे पैरासिटामोल, (एंटीबायटिक छोड़कर) दी जाती है। कुल मिलाकर आमतौर पर होने वाले 20–25 रोगों की सूची बना रखी है, जिनके लिए सामान्य दवा से काम हो जाता है इसीलिए होम्योपैथी की सर्वाधिक, आयुर्वेद की कुछ अधिक और ऐलोपैथिक की केवल तीन दवाइयाँ इसमें शामिल हैं।

☼ इसके अलावा खेती के विकास के लिए स्वयंसेवकों द्वारा जो कार्य हो रहे हैं क्या वे भी सेवा कार्यों की श्रेणी में आते हैं?

□ हमने ग्राम विकास का एक अलग विभाग बनाया है जिसमें प्रमुख रूप से गांवों में पांच बिंदुओं पर काम करने की योजना है। हम ग्राम को परिवार इकाई का एक थोड़ा सा बड़ा रूप मानते हैं। तो गांव परिवार के रूप में रहे इसके लिए हमने कई प्रकार के प्रयोग शुरू किए हैं। जो पांच बिन्दु लेकर काम करते हैं वे है – 1. गांव में कोई निरक्षर न रहे, 2. गांव में कोई दवाइयों के अभाव में अस्वस्थ न रहे। 3. कृषि तंत्र परावलंबी न रहे क्यों कि आज हरित क्रांति के नाम से खेती को गलत दिशा देकर हमने परावलंबन को स्वीकार किया है। आज किसान बीज, गो आधारित जैविक कार्य, खाद और कीटनाशकों के लिए दूसरों पर निर्भर है। इसके साथ रासायनिक खाद ने खेती की उर्वरा शक्ति को भी समाप्त कर दिया है। हम इस क्षेत्र में काम करते हुए चाहते हैं कि किसान जैविक कृषि की ओर जाए, स्वावलंबी बने। अपने बीज, अपनी खाद, अपने कीटनाशक गांव के अंदर ही निर्माण करे। इस हेतु उनको प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है। इस दिशा में हमारा प्रयास चल रहा है। तीसरा बिन्दु है गांव में समाज को जोड़ने वाली कई प्रकार की इकाइयो को सशक्त

करना। इनमें व्यायाम शालाएं, वाचनालय, भजन मंडलियां आदि आते है। मंदिर केवल देव पूजन का ही नहीं, बल्कि लोगों को एकत्रित करने का भी केन्द्र है। चौथा बिन्दु है समरसता का। गांव में होने वाले सभी पर्व सारे समाज के सांझे होते हैं। ऐसे सामाजिक पर्व, मंदिर और आयोजन अधिक हों जो समाज में व्याप्त विषमता को समाप्त करने वाले बनते जाए, इस नाते हम लोग प्रयास करते हैं। उसके साथ–साथ स्वावलंबन भी आता जाएगा। पांचवा बिन्दु हैं कि आर्थिक दृष्टि से भी ग्रामीण जन सशक्त होते जाएं। इस नाते कृषि के साथ–साथ महिलाओं के लिए रोजगार का विषय लेकर उनके स्वयं सहायता समूह खड़े किये जाने के प्रयास चल रहे हैं। अभी हम कह सकते हैं कि पूरे देश में लगभग 600 गांवों को इस प्रयोग के लिए हमने अपनाया है। उनमें लगभग 100 गांव ऐसे हैं जहां कुछ परिणाम देने लायक, दिखाने लायक काम खड़े हुए हैं।

☼ ये 100 गांव कहां होंगे?

□ पूरे देश में अलग–अलग प्रांतों में हैं। सुरेन्द्र सिंह चौहान जी, हमारे ग्राम विकास के अ.भा. प्रमुख रहे हैं के साथ कार्यकर्त्ताओं ने इस विषय को अच्छी तरह समझकर चलना शुरू किया है। तीन–चार गांव आंध्रप्रदेश में हैं और ऐसे ही कुछ गांव महाराष्ट्र में है।

☼ सेवा और कृषि विकास के ये कार्य संघ के लगभग 50 वर्ष पूरे होने के बाद शुरू हुए। क्या यह विचार बाद में आया कि सेवा कार्यों में अधिक जाना चाहिए ? तब तक संघ में शारीरिक बलवर्धन, शाखा कार्य, गणवेश, पथ संचलन, सूर्य नमस्कार आदि पर एकान्तिक जोर रहा। बाद में अन्य आनुषांगिक संगठन बने। सेवा कार्यों में अधिक जोर के पीछे क्या कारण रहे?

□ प्रारंभिक अवस्था में तो हमने शाखा द्वारा व्यक्ति निर्माण पर ही अधिक बल दिया था। लेकिन स्वयंसेवक स्वयं की प्रेरणा से बहुत प्रकार के सामाजिक कार्यों में संलग्न थे। इसके साथ–साथ हमने उनमें और अधिक दायित्वभाव जागृत किया। वैसे भी संगठन विकास की एक प्रक्रिया है प्रोग्रेसिव डेवलपमेंट। क्रमिक विकास होता जाता है, कोई बात पहले आई और कोई बाद मे, ऐसा नहीं है। जब हम विकास की अवस्था में यहां तक पहुंचे, और तब स्वयंसेवकों की बहुत बड़ी शक्ति जागृत हुई। उसे समाज परिवर्तन की प्रक्रिया में और अधिक लगाया जाए, यह सोचा जाना स्वाभाविक ही था। यह विचार पूजनीय डॉक्टर साहब, श्रीगुरूजी के मार्गदर्शन में थे ही, परमपूजनीय बाला साहब देवरस जी ने तो सामाजिक विषमता के प्रश्न को सबके सामने रखते हुए अधिक मुखरित होते हुए इसे उठाया था। यह स्वाभाविक चलने वाला एक विकास क्रम है, 50 साल बाद सोचे जाने वाली बात नहीं। उसी विकास क्रम में हम इस नतीजे पर पहुँचे कि स्वयंसेवको की शक्ति इस प्रकार के सेवा कार्यों में लगानी चाहिए, जो परिवर्तन ला सकती है।

☼ आपको लगता है कि इस कार्य से समाज में परिवर्तन आ सकता है? परिवर्तन के लिए राजनीति का क्या स्थान है?

□ इस प्रकार के आत्मीय कार्यों से ही सामाजिक परिवर्तन आ सकता है। राजनीति को परिवर्तन से नहीं जोड़ना चाहिए। राजनीतिक परिवर्तन कई कारणों से होता रहता है। राजनीति अथवा सत्ता पर समाज परिवर्तन का दायित्व है या नहीं यह चिंतन का विषय है। सत्ता का काम सामान्य लोगों को सुविधाएं उपलब्ध कराना, संसाधनों का निर्माण करवाना, सुरक्षा रखना आदि है। समाज की पीड़ा और संवेदना को दूर करना हर व्यक्ति का स्वभाव बनना चाहिए। इसलिए सामाजिक कार्य समाज को ही करने चाहिए। हम नहीं मानते कि सामाजिक परिवर्तन कानूनों या राज्य सत्ता द्वारा होता है, कानून सहायक बन सकते हैं, पर उनके द्वारा सामाजिक परिवर्तन होगा, ऐसा संभव नहीं है।

☼ इतने अधिक सेवा कार्यों के बावजूद क्या वजह है कि संघ की अभी तक की छवि बहुत मिलिटेंसी वाली है, कहीं पब में दंगा, कहीं हिन्दू मुस्लिम, या क्रिश्चियन विवाद हो, ऐसे ही मामलो में संघ का नाम लिया जाता है। इन विषयों के अलावा संघ की मीडिया में कोई छवि आती ही नहीं। संघ सेवा कार्य करने वाला भी होता होगा, ऐसी धारणा नहीं दिखती। इतने सेवा कार्य करने के बाद भी संघ की छवि इतनी अल्पसंख्यक विरोधी, हिंसक क्यों है ?

□ इसके लिए कुछ तो राजनीति प्रेरित बातें जिम्मेदार हैं और कुछ हमारी अपनी कार्य पद्धति भी। हम मानते रहें कि हमें ज्यादा प्रचार–प्रसार में रूचि नहीं लेनी चाहिए। हमने कभी प्रचार की बातों पर जोर नहीं दिया क्यों कि हम चाहते हैं कि सेवा समाज का स्वभाव बनना चाहिए। यह प्रचार का विषय है ऐसा हमें लगता हीं नही। आपकी बात ठीक है। हमें अच्छी बातों को प्रचारित करना चाहिए था।

☼ ऐसा तो नहीं है कि आप प्रसिद्धि नहीं चाहते, अब तो संघ में प्रचार विभाग है। क्या आपको नहीं लगता कि जो आप करना चाहते हैं वह सबको बता नहीं पाए ?

□ हमारा प्रचार विभाग तो विचाराधरा की प्रसिद्धि और उसको स्थापित करने के लिए है। लेकिन व्यक्ति के अंतःकरण में कहीं अहंकार, आत्मकेन्द्रितता, व्यक्तिकेन्द्रित न आ जाए, इसकी भी हम चिंता करते हैं। हम जो करना चाहते हैं वह हम नहीं बता सके, इससे अधिक यह कहूंगा कि, उस प्रकार की मानसिकता हम नहीं बना पाएं। यह हमारी कल्पना में नहीं था। व्यक्ति निःस्वार्थ भाव से काम करे, निरपेक्ष भाव से काम करे, नाम और प्रचार के लिए काम न करे यही हम हमेशा कार्यकर्ताओं को बताते आए। इसलिए बहुत से स्वयंसेवक मौन रूप से इस प्रकार के कई कार्यों को करते आए। लेकिन बाद में जब सेवा कार्यों के लिए हमने संस्थाओं का निर्माण किया तो उन्हें चलाने के लिए धन की भी आवश्यकता पड़ी। स्वाभाविक रूप से कानून के अंतर्गत रहकर हमको व्यवस्था निर्माण करनी पडी। जब वह व्यवस्था बनी तो संस्थाओं में शासन के प्रति उत्तरदायी नियमों के कारण लेखा–जोखा देने और कार्य का पूर्ण विवरण प्रकाशित करने की प्रक्रिया शुरू हुई जो आवश्यक भी है। उसी में से कार्य की जानकारी सबको अधिक मिलने लगी। अभी भी अपने कार्यों की प्रसिद्धि का जो दृश्य दिखता है वह वस्तुतः समाज के प्रति उत्तरदायित्व के कारण कर

रहे है। हम व्यक्ति केन्द्रित कार्यों को उतना प्रचारित नहीं करते जितना कि समूह केन्द्रित कामों को करते आए हैं।

☼ आपके सरल सौम्य व्यक्तित्व से ऐसा लगता है कि जैसे आप सेवा कार्य के लिए ही प्रचारक बनें है। क्या आपकी बचपन से ही कुछ इस प्रकार के कार्यों के प्रति रुचि रही? आप कब और कैसे स्वयंसेवक बने ?

□ मैं तो बाल्यकाल से ही दूसरी – तीसरी कक्षा अर्थात् सन् 1955–56 से संघ का स्वयंसेवक रहा। मेरा सौभाग्य रहा कि मेरे परिवार में बड़े भाई संघ के स्वयंसेवक रहे। उन्हीं के कारण मैं भी संघ की शाखा से जुड़ा। मुझसे दो बड़े भाई हैं जो अपना दायित्व पूर्ण कर अवकाश प्राप्त कर चुके है। और एक बहिन है ।

☼ आप मूल रूप से कहां के निवासी हैं ?

□ मैं मूल रूप से इंदौर का निवासी हूँ । लेकिन प्रचारक निकला मुम्बई के पास डोंगड़ी नामक स्थान से। वहीं से मैंने स्नातक की उपाधि प्राप्त की । वह 1975 का वर्ष था जब आपातकाल घोषित हुआ था।

☼ 1975 में प्रचारक निकले और 2009 में सरकार्यवाह । ऐसा नहीं लगता कि आपका सरकार्यवाह तक आना बहुत तीव्र गति से हुआ ? और यह इतने सामान्य रूप में कि शायद संघ में ही ऐसा संभव हो ?

□ ऐसा तो नहीं कह सकते क्योंकि संघ में तो मुझसे भी छोटी आयु के कार्यकर्ता आज अखिल भारतीय अधिकारी हैं। हां इतना जरूर है कि संघ में कार्य प्रवाह के साथ दायित्व प्रवाह भी सतत स्वाभाविक गति चलता रहता है जिसमे ंकुछ भी असामान्य नहीं होता ।

☼ आपकी आयु अभी कितनी हुई ?

□ अभी तो बस इकसठ पूरे हुए हैं।

☼ ओह! तो पूज्य सरसंघचालक मा. मोहन भागवत जी आप से आयु में कम हैं ?

□ हां आयु में तो छोटे हैं, किन्तु अनुभव में वे मुझसे बड़े हैं।

☼ आप सरकार्यवाह हैं, आपको तो पूरे देश के विषयों का चिंतन करना है। आज के समय में जो एक सबसे ज्यादा आसन्न संकट है जिसका संघ जनजागरण द्वारा सामना करने को सिद्ध है वह कौन सा विषय है ?

□ आज अगर सबसे बड़ी चुनौती कहा जाए तो मैं कहूंगा कि वह हिन्दुत्व के जागरण की ही है। हिन्दू समाज में सिद्धांत के साथ–साथ व्यावहारिक बातों को लेकर समाज अपने सारे भेद–भाव भुलाकर खड़ा रहे इस बात को बहुत जोर से रखने की आवश्यकता है। बाह्य संकट तो हैं ही,

उसके साथ–साथ समाज में अंतनिर्हित चुनौतियों के प्रति भी उतनी ही गंभीरता आवश्यक है। आतंकवाद भी एक बड़ी समस्या है, उसके प्रति भी समाज निर्भय होकर खड़ा रहे यह जरूरी है।

इसके साथ धर्मांतरण एक बड़े षडयंत्र के रूप मे देश में चल रहा है। समाज के गरीब व भोले–भाले लोगों को कपट जाल में फंसा कर मतांतरित किया जा रहा है। इसे रोकने व मतांतरित बन्धुओं की घर वापसी सुनिश्चित करने हेतु समाज को लेकर चलना होगा। हिन्दू चिंतन में वह प्रतिरोधक औेर विजयशक्ति है। केवल उसके जागरण की आवश्यकता है।

☼ यानी कि हिन्दू बनाम हिन्दू वाली चुनौती के प्रति ?

□ हां ! हिन्दू बनाम हिन्दू। हम चाहते हैं कि समाज एकरस होकर खड़ा रहे, आत्मविश्वास के साथ खड़ा रहे, इस पर हमको अधिक ध्यान देना होगा। बाकी संकट तो आते हैं जाते हैं। उनके साथ मुकाबला करने के लिए हमारा अनुभव है कि समाज एक होकर खड़ा होता है और मुकाबला करता है तो विजय मिलती है।

इसी प्रकार मैं मानता हूँ, आतंकवाद का उत्तर समाज के संगठन में है। समाज जागरण ही आतंक का समाधान है। जहां तक आर्थिक विषयों तथा मंदी का प्रश्न है उसके कई पहलू हैं। उसके संदर्भ में बुनियादी बातों को और अपनी जीवन शैली को समझकर हमें अपने देश के अनुकूल आर्थिक नीति बनानी होगी। आज शायद यह उतने स्वतंत्र रूप में नहीं बन पा रही ेहै। वैश्वीकरण के कारण एक दूसरे पर निर्भर होने की प्रक्रिया बढ़ी है। और उसके परिणामस्वरूप एक दूसरे के आर्थिक विकास और पतन के असर सब पर होते रहते हैं, यह चिंता का विषय है।

☼ जब आप हिन्दुत्व कहते हैं तो लोग कहते हैं कि आप नफरत फैला रहे हैं, आप अल्पसंख्यक विरोधी है, मुस्लिम और क्रिश्चियन विरोधी हैं। इस समय हिन्दुत्व पर जो आघात हो रहे हैं उनके बारें में आपको क्या कहना है?

□ हिन्दुत्व नफरत नहीं समानता बंधुत्व और लोकतांत्रिक भावनाओं का पर्याय है। इस देश में बहुलतावाद, विविधता में एकता की भावना तथा सर्वपंत समभाव तभी तक संभव है जब तक हिन्दुत्व को मानने वाले बहुसंख्यक है। लोगों ने समय–समय पर हिन्दुत्व की कई परिभाषाएं दी हैं फिर भी लोग हिन्दुत्व को लेकर चर्चा करते हैं। ऐसी चर्चा से हमें डरना नहीं चाहिए, हिन्दुत्व हमारी पहचान है, इस शब्द को लेकर हम चलते रहेंगे।

इस शब्द से कई प्रकार की भावनाएं जुड़ी हैं। हम असंदिग्ध रूप से कहते हैं कि भारत की पहचान हिन्दू शब्द से जुड़ी है। भारत के प्रत्येक सामाजिक जीवन क् मूल में हिन्दुत्व ही दिखाई देता है। लेकिन आज जिस तरह की राजनीति चल रही है उसमें शब्दों को गलत अर्थ में प्रस्तुत किया जाता है। हालांकि सर्वोच्च न्यायालय ने भी कह दिया है कि हिन्दू कोई संप्रदाय नहीं है। बल्कि यह तो एक जीवनशैली है। इस सत्यता को स्वीकार करने की राजनीतिक क्षेत्र में मानसिकता बननी चाहिए। लेकिन इसके बावजूद राजनीति में इसकी स्वीकार्यता के प्रति एक

संकुचित भाव है ऐसा हम मानते हैं। लगातार कई शताब्दियों से हिन्दू समाज पर अमानवीय आक्रमण होते आए हैं। आज की स्थिति में जो भिन्न पहलू हैं वह है अमानवीय स्तर पर आक्रमणों के साथ बौद्धिक जगत में भ्रम फैलाकर भी हिन्दुओं पर आक्रमण किये जा रहे है। बौद्धिक आक्रमण का यह नया पहलू जुडा है। इस चुनौती का एक ही उत्तर है कि परम्परा से हिन्दू जीवन मूल्यों को मानने वाला समाज जागृत, प्रतिबद्ध एवं संगठित हो।

☼ बाकी राजनीतिक पार्टियों में भी हिन्दू हैं तो वे आपकी इस अवधारणा से क्यों सहमत नहीं, होते ? हिन्दुत्व का आग्रह राजनीतिक लाभ का प्रश्न नहीं है, क्या संघ इस धारणा को ठीक से नहीं समझा पाया है बाकी पार्टियों या विचारधाराओं से संघ का सम्बन्ध कैसा होना चाहिए ?

□ इसका एक ही उत्तर है कि परम्परा से हिन्दू जीवन को मानने वाला समाज जागृत, प्रतिबद्ध और संगठित हो। वास्तव में हिन्दुत्व क्या है यह अन्य राजनीतिक पार्टियां समझ नहीं पाईं या समझते हुए भी राजनीतिक दृष्टि से लाभ हानि की चिंता करते हुए इस विषय में सच शायद कहने का साहस नहीं रखतीं। सबके सामने हिन्दुत्व का विषय लाभ–हानि का विषय नहीं बनना चाहिए। यह तो हमारी सामाजिक–राष्ट्रीय पहचान है । हो सकता है कि हम उन्हें हिन्दुत्व बताने में कुछ कम पड़े हों। जहां तक अन्य राजनैतिक दलों से संबंध का प्रश्न है, हम तो पहले से ही कई प्रकार के लोगों से संबंध रखते आए है। संघ में तो यह वैचारिक शत्रुहीनता का भाव परम्परा से ही रहा है। पूज्य गुरूजी का कई राजनीतिक नेताओं के साथ सम्बन्ध था, दत्तोपंत ठेंगड़ी जी की भिन्न विचारधाराओं वाले राजनैतिक नेताओं से बहुत निकटता थी, मित्रता थी। पर आज ऐसा लगता है कि राजनीतिक क्षेत्र में मन की उदारता में कहीं कमी आ गई है। हम तो चाहते हैं कि सभी दलगत दायरों विचारधाराओं के भेद से ऊपर उठकर देश की सामाजिक समस्याओं का हल किया जाना चाहिए। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि दलगत भेदाभेद से ऊपर उठकर सोचने की परिस्थितियां क्षीण होती जा रहीं हैं ।

☼ पार्टीगत दायरों से ऊपर उठकर सोचने की परिस्थितियां क्यों क्षीण होती जा रही हैं ?

□ क्योंकि सत्ता ही सब प्रकार की शक्ति का केन्द्र हो गया है, देश उनकी दृष्टि में छोटा हो गया है। सत्ता बड़ी हो गई है। व्यक्ति की आकांक्षा सत्ता में जाने की अधिक है। सत्ता में जाते हुए हर व्यक्ति दावा करता है कि वह समाज की सेवा के लिए जा रहा है, हम तो उनकी भावनाओं का सम्मान करते हैं और कि व्यक्ति वास्तव में समाज की सेवा करेगा। लेकिन दिखता है कि वास्तव में वह निजी स्वार्थों के लिए कार्य कर रहा है, तो बड़ी पीड़ा होती है। आज का राजनीतिक परिदृश्य जब हम देखते हैं कि बड़ी सहजता से लोग इधर से उधर छलांग लगाते हैं, दल बदलते रहते हैं, तो सिद्धांत की नीति कहां रही ? अगर कोई राजनीतिक सिद्धांतो के बल पर चले, तो विचारों की भिन्नता रहने में भी कोई दिक्कत नहीं है। राष्ट्र के विकास के संबंध में, आर्थिक नीति के संबंध में, सुरक्षा के संबंध में, विभिन्न देशों के साथ संबंध रखने के बारे में अलग–अलग विचार हो सकते हैं।

पर उसका आधार क्या हो ? व्यक्ति का हित हो या राष्ट्र का? हम तो पहले से चाहते हैं कि हर दल राष्ट्र हित को ही आधार बनाकर अपने कार्यक्रमों तथा नीतियों की योजना बनाए।

☼ हिन्दुत्वनिष्ठ राजनीति की सफलता कहां और कैसे मापेंगे। अभी तक कश्मीर के हिन्दू वापस नहीं गए और रामसेतु पर आघात हुए ?

□ मुख्य अवरोध छद्म सेक्युलरिज्म का है। वे भारतीय आस्था के हर

पहलू पर दोहरापन दिखाते है। अपने आप को नास्तिक समझने वाले बंगाल के साम्यवादी जो धर्म व देवताओं के विरोधी कहे जाते है, सरस्वती पूजा की छुट्टी क्यों देते हैं ? वहां सत्ता में बैठे राजनीतिक दलों के लोग दुर्गा पूजा की समितियों में क्यों जाते हैं? अगर उनका दुर्गा पर विश्वास नहीं है, सरस्वती पर विश्वास नहीं है तो वे ऐसे आयोजनों का नेतृत्व क्यों करते हैं? तो ऐसा करके वह अपने विचारों के साथ भी धोखा कर रहे हैं। कभी–कभी लगता है कि समाज में छवि बनाने के लिए वे अपने सिद्धांतों के साथ बेईमानी या पाखंड करते हैं। तो इस प्रकार का व्यवहार देखकर उनके प्रति क्या विश्वास जगेगा ? और कैसे लोग उनके प्रति श्रद्धा भाव लेकर चलेंगे। हम तो चाहते हैं कि राजनीतिक क्षेत्र में नेता ऐसे हो जो सामान्यतः श्रद्धा और सम्मान के पात्र बन सकें। इस देश में एक ऐसी भी पीढ़ी थी जिसमें राजनीतिक दल व विचारधारा से ऊपर उठकर एक साथ समाज के विषय में विचार किया जाता था। अब वह नहीं दिखती।

जहां तक हिन्दुत्व की राजनीति का आपका प्रश्न हैं, हमारा मानना है कि हिन्दुत्व के प्रति निष्ठा यह किसी भी राजनीति का विषय नहीं हो सकता। यह हमारी धारणा है, जीवन शैली है। इसलिए हिन्दुत्व को राजनीतिक मुद्‌दा बनाना, यहीं गलत है। सभी दलों में बैठे हुए लोगों को राष्ट्रीय हित के प्रश्नों पर दलों की परिधि से ऊपर उठते हुए नीतिया बनाए जाने की आवश्यकता है।

☼ हिन्दू द्वेष की राजनीति के कारण न राम मंदिर बना, न कश्मीरी हिन्दू वापस पहुंचे और न धर्मांतरण रुका ? न गोहत्या पर रोक लगी ? ये राष्ट्रीयता पर आघात के मुख्य बिन्दु थे ।

□ ये सारे विषय केवल धार्मिक नहीं मानने चाहिए। विषय चाहे गोहत्या का हो, कश्मीरी हिन्दुओं की वापसी या रामसेतु का हो, ये सभी देश के विकास से जुड़े है। इनको न करने से देश की हानि होगी। ये किसी समुदाय विशेष की हानि से नहीं जुड़े हैं। गोहत्या का भूमि के उर्वरापन से संबंध है, इसी प्रकार रामसेतु का विषय पर्यावरण, ऊर्जा, सागरतटीय सुरक्षा से जुड़ा हुआ है। वह केवल भावात्मक विषय नहीं है। यह ठीक है कि समाज भावात्मक विषयों को ही जल्दी स्वीकार करता है। इसलिए प्रायः ऐसे विषयों को भावात्मक रूप में ही उभारा जाता है। पर हम मानते है कि समाज इसके अन्यान्य पहलुओं को भी समझे और फिर राजनीतिक दल भी इस पर विचार करें। लेकिन दुर्भाग्य से अंतःकरण में, चाहते हुए भी, पाखंड एवं राजनीतिक स्वार्थ के कारण लोग अपने अंतःकरण की भावना को भी खुलकर प्रकट करने की हिम्मत नहीं करते। कौन नहीं चाहता यहां पर

सभी के लिए समान नागरिक कानून हो। लोग कहेंगे कि बात तो ठीक है पर मैं प्रकट से नहीं कहता। वोट बैंक का डर है। रामसेतु के संदर्भ में यदि कहा जाए तो बड़े–बड़े लोग वहां जाते हैं और कहते भी हैंकि वह श्रद्धा का केन्द्र है, उसे बचाना चाहिए। जब बाबरी ढांचा था तो सभी लोग उसे मंदिर मानते थे लेकिन राजनीतिक स्वार्थ के आगे सत्य भी उपेक्षित हो जाता है।

☼ आपको लगता है कि ऐसी राजनीति का उदय होगा जो भारत भक्ति के विषय – अयोध्या में मंदिर निर्माण, रामसेतु रक्षण, कश्मीरी हिन्दुओं की वापसी, धर्मांतरण पर रोक तथा धारा 370 की समाप्ति इस तरह के विषयों का ठीक से समाधान करेगी ? क्या यह संभव है ?

□ ऐसा राजनीतिक उदय तभी संभव है जब यहां का जनसामान्य भी इन बातों को समझकर मतदान करने के लिए जाए । जब तक यहां का राष्ट्रीय समाज इन प्रश्नों को गंभीरता से समझकर राजनेताओं का चयन नहीं करेगा, तब तक परिवर्तन नहीं आएगा।

☼ अर्थात क्या वह समय आ गया है ?

□ ऐसा लगता है जागरण की लहर चल पड़ी है। थोड़ा इसको और गति मिल जाए तो परिवर्तन आ सकता है। मैं किसी राजनीतिक दल, इसकी या उसकी की बात नहीं करना चाहता लेकिन हिन्दू भावनाओं को जागृत करते हुए न केवल संख्या का प्रभाव अपितु चिंतन का प्रभाव एव दबाव भी होना चाहिए। सामान्य व्यक्ति प्रत्येक बात का गहराई से चिंतन कर पाता है ऐसा नहीं है। वह तत्कालीन घटनाओं से प्रभावित होता है, यह स्वाभाविक है, पर इसके साथ–साथ चिंतन करने वालों की शक्ति भी सही दिशा में बढ़नी चाहिए । उपरोक्त बिन्दुओं पर निःसंकोच दृष्टिकोण रखने पर कुछ दल इस दिशा में चिंतन कर रहे है। पर वे अपवाद रूप ही है।

☼ अर्थात .... स्पष्ट कीजिए ?

□ लोकतंत्र स्वीकार करने के कारण जिसको अधिक मत मिलेंगे वह चुनकर आएगा। मतदाता भी जागरूक होकर मतदान करे ऐसा प्रचलन दुर्भाग्य से हमारे यहां नहीं है। इसलिए अगर हमारा चिंतन सही है तो उस चिंतन को रखने वालों का भी सामाजिक जीवन पर दबाव और प्रभाव पड़े। संघ यही काय कर रहा है। संघ चाहता है कि अपने चिंतन से लोग प्रभावित और अधिक जागृत हो तथा जागरूक होकर मतदान करें तथा अपने संवैधानिक अधिकारों का उपयोग करें।

☼ स्वयंसेवक मतदाता भी है, और नागरिक भी। एक मतदाता और नागरिक होने के नाते वह किन बिन्दुओं का ध्यान रखे, मतदान का वातावरण बनाए?

□ हमने तो इस बार कहा ही है। पूजनीय सरसंघचालक जी के उद्बोधन में आया है कि 100 प्रतिशत मतदान हो। इस देश का दुर्भाग्य है कि 40 प्रतिशत से 50 प्रतिशत मतदान होता है। उसमें जिसको एक तिहाई मत मिलता है वह जीतकर आता है। कहीं बहुत अल्पमत प्रतिशत पर भी दल सत्ता में आ जाते है। इस स्थिति में परिवर्तन लाना है तो जागृत मतदान और सबका मतदान होना चाहिए। संघ इस बात का आग्रही है कि देश के संविधान ने अगर अधिकार दिया है तो अधिकारों

का प्रयोग करने की मानसिकता बननी चाहिए। इसके लिए कानून बनाने के पक्ष में हम नहीं हैं कि वोट नहीं डालेंगे तो सजा होगी। इसकी आवश्यकता नहीं है, इसके बजाए प्रेरणा जगानी चाहिए। संघ के स्वयंसेवक समाज में जाते हैं तो इन विषयों को लेकर चुनाव में मतदान का आग्रह जरूर हो और अधिक से अधिक लोग जहां चाहें वहां किन्तु घर से बाहर निकलकर अवश्य अपना मत प्रस्थापित करें।

☼ भैय्या जी आप नेपाल भी होकर आए हैं नेपाल की स्थिति क्या है, विश्व में एकमात्र हिन्दू राष्ट्र था, वह स्थिति अब खत्म हो गई ?

□ वहां की संविधान सभा की रचना हो रही है और संविधान सभा में वहां की जनता द्वारा यह प्रयत्न किया जा रहा है कि इसे पुनः हिन्दू राष्ट्र नाम दिया जाए। संविधान अभी बनना है, उसमें हिन्दू राष्ट्र शब्द की पुनः स्थापना हो वह जनता की भावनाओं के अनुरूप है। इसके लिए प्रयास चल रहा है।

☼ आप युवा हैं, आपको क्या पसंद है , आपको गीत कौन से पसंद हैं और कैसी फिल्मे देखते हैं ? आखिरी फिल्म कौन सी देखी ?

□ मुझे सिनेमा देखने का मौका मिलता ही नहीं, कभी–कभार कोई साथी आग्रह करते हैं, लेकिन अभी बहुत दिनों से देखी नहीं है, इसलिए स्मरण नहीं है। मैं वैसे तो भक्तिगीत सुनता रहता हूँ। भीमसेन जोशी व, सुधीर फड़के का संगीत सुनता हूँ और महाराष्ट्र का होने के कारण मराठी संगीत भी सुनता हूँ।

☼ भोजन में क्या पसंद है ?

□ सामान्यतः सादा भोजन पसंद करता हूँ लेकिन कुछ मीठी चीजें आ जाती हैं तो ना नहीं कर पाता, दुर्बलता है।

☼ स्वयंसेवकों के लिए एक वाक्य में आप क्या संदेश देंगे ?

□ संघ की राष्ट्र के प्रति जो प्रतिज्ञा है स्वयंसेवक निःस्वार्थता से तन मन धनपूर्वक उसका पालन करें। यही स्वयंसेवक का व्रत है। हम ऐसे स्वयंसेवक अर्थात "व्रती स्वयंसेवक बनें।"